अध्याय II

सम्बन्धित साहित्य का पुनरावलोकन

2.1 भूमिका

2.2 सम्बन्धित शोध कार्य का पुनरावलोकन

2.3 उपसंहार

अध्याय II

सम्बन्धित साहित्य का पुनरावलोकन

2.1 भूमिका :–

वैज्ञानिक प्रणाली का साहित्य समीक्षायह मुख्य भाग है। एवं यह सामाजिक विज्ञान या भौतिकीय प्रकृति के वैज्ञानिक अनुसंधानो क्षैत्रो में कार्यान्वित किया जाता है।

सम्बन्धित साहित्य की समीक्षा अनुसंधायक की जिस क्षैत्र में वह अनुसंधान करने वाला है। उसमें वर्तमान ज्ञान से परिचित कराती हैं। सम्बन्धित साहित्य की समीक्षा करने से पिछले अनुसंधायको ने अपने अध्ययन में और आगे अनुसंधान के लिए क्या अनुशसाएं की थी ।

संम्बन्धित साहित्य के ज्ञान से अनुसंधायक का अन्य व्यक्तियो द्वारा कियो गऐ कार्य से पूर्ण परिचय ही जाता है। और वह अपने उददे्श्यो का स्पष्ट व सम्बन्धित साहित्य के अध्ययन से अनुसंधायक अलाभप्रद व अनुप्रयोगी समस्याओ से बच सकेगा । यदि अध्ययन के परिणामो की स्थिरता व वैधता भली प्रकार सिद्ध हो चुकी हैं। तो उसे दोहराना निरर्थक हैं। संम्बन्धित साहितय की समीक्षा से अनुसंधायक अनुसंधान प्रक्रिया का समझता है। जिससे यह ज्ञान लेता है कि अध्ययन किस प्रकार करता है। उसे पहले अध्ययनो में प्रयुक्त यंत्र व औजारों की भी जानकारी मिलती है जो सफल व उपयोगी रहे थे। उसे उन सांखिकी विधियों की अर्न्तदृष्टि भी मिल जाती है। इनके द्वारा परिणामों की वैधता सिद्ध की जाती है।

2.2 सम्बन्धित शोध कार्य का पुनरावलोकन :–

1. **अनुराधा, (1978) ने अपने अध्ययन''** पर्यावरण प्रदूषण के प्रति जागरूकता'' भोपाल के शासकीय एवं निजी विद्यालयों के छात्रों में अध्ययन किया। अपने अध्ययन में उन्होनें निम्न निष्कर्ष निकालेः–

   (i) कक्षा 9वीं के विद्यार्थी प्रदूषण से पर्यावरण के कारण पर्यावरण में होने वाले नुकसान के बारे में जानते हैं। फिर भी उन्हें पर्यावरण एवं प्रदूषण जैसे परिभाषिक शब्दों को समझाने हेतु अधिक निर्देशों की आवश्यकता है।

   (ii) छात्र व छात्राओं में पर्यावरण जागरूकता के प्रति कोई अन्तर नहीं है।

   (iii) निजी विद्यालयों के छात्रों में पर्यावरण जागरूकता की दक्षता शासकीय विद्यालयों के छात्रों से अधिक है।

   (iv) विभिन्न जागरूकता स्तर वाले विद्यार्थियों के प्रदूषण की छवि पर प्राकृतिक एवं अन्तिम टेस्ट में कोई अंतर नहीं है।

2. **गुप्ता, ग्रेवाल एवं राजपूत (1981)** ने अपने अध्ययन में बताया कि औपचारिक, अनौपचारिक, औपचारिकेत्तर, ग्रामीण एवं शहरी स्कूल के 7–12 वर्ष के बच्चों में पर्यावरण जागरूकता के मुख्य आयामों के संबंधित में निश्चित एवं समान छवि है। कुछ क्षेत्रों में इन तीनों समूहों में जागरूकता वस्तुतः अपर्याप्त है। यह वे आयाम थे जो आलोचनात्मक विचार एवं ज्ञान के उपयोग में आवश्यक थे जो छात्रों में विकसित नहीं किये गये है। साथ ही वे ठोस अनुक्रिया करने की अवस्था में मौजूद थे।

3. **गोपाल कृष्णन (1992)** – ने एक अध्ययन में कक्षा पाँच के छात्रों को पर्यावरण शिक्षा प्रदान की तथा उन पर पर्यावरणीय शिक्षा परीक्षण के प्रशासन के फलस्वरूप पाया कि पर्यावरण शिक्षा प्रदान करने का उद्देश्य बालक बालिकाओं में पर्यावरण के प्रति जागरूकता तथा समझबूझ उत्पन्न करना है। पर्यावरण शिक्षा प्रदान करने से छात्रों पर अच्छा प्रभाव पड़ा इस आशय हेतु बच्चों के निकटतम एवं दूरस्थ परिवेश/पर्यावरण के अनुभवों पर आधारित गणवेशनात्मक एवं खोजपूर्ण क्रिया कलापों की सुनियोजित परिकल्पना एवं आयोजन आवश्यक है।

4. **प्रहाराज बी (1991)** – ने माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों कि पर्यावरण संबंधित ज्ञान तथा अभिवृत्ती का अध्ययन किया। इसके अंतर्गत पूरी जिले के 416 सेवापूर्व प्रशिक्षण प्राप्त शिक्षक तथा 302 सेवाकालिन प्रशिक्षण प्राप्त प्रशिक्षण प्राप्त शिक्षकों का चयन किया गया। इस अध्ययन से यह निष्कर्ष निकाला की सेवापूर्ण प्रशिक्षण प्राप्त शिक्षको की अपेक्षा सेवाकालिन प्रशिक्षण प्राप्त शिक्षकों का पर्यावरण संबोधित ज्ञान तथा अभिवृत्ती ज्यादा है।

5. **पटेल और पटेल (1994)** – ने प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षकों की पर्यावरण जागरूकता का क्षेत्र, शैक्षिक अनुभव तथा लिंग के आधार पर अध्ययन किया।

उन्होनें यह निष्कर्ष निकाला कि ग्रामीण क्षेत्र के कम अनुभव प्राप्त शिक्षिकाओं की अपेक्षा शहरी क्षेत्र के ज्यादा अनुभव प्राप्त शिक्षक पर्यावरण से अधिक जागरूक है।

6. **प्रजापत (1996)** – कक्षा चौथी में पर्यावरणीय जागरूकता विकास के कार्यक्रम के परिणाम का अध्ययन करना ।

अध्ययन के मुख्य उद्देश्य :–

1. कक्षा चार के छात्रों में पर्यावरण सम्बन्धी जागरूकता कार्यक्रम का निर्माण करना ।
2. कक्षा चार के छात्रों में पर्यावरण सम्बन्धी जागरूकता निर्माण करना ।
3. कक्षा चार के छात्रों पर्यावरण सम्बन्धी जागरूकता में बुद्धि–लब्धि के परिणाम का अध्ययन करना
4. कक्षा चार के छात्रों में पर्यावरण सम्बन्धी जगरूकता मे लिंग के परिणामो का अध्ययन करना।

संशोधनकर्ता ने न्यादर्श का चयन गांधीनगर एवं गुजरात के प्राथमिक निजी स्कूल से किया एवं संग्रहित उपयोग किया, संग्रहित संमको के विश्लेषण के लिऐ t मान एवं ANOVA सांखिकीय प्रविधि का उपयोग किया।

अध्ययन के मुख्य निष्कर्ष :–

1. कक्षा चार के छात्रों मे पर्यावरणीय जागरूकता को बढाने मे पूर्व सम्पादित प्रांरभिक पर्यावरणीय जागरूकता का मुख्य कार्य रहता हे।
2. कक्षा चार के छात्रों में पर्यावरणीय जागरूकता के विकास में पर्यावरणीय जागरूकता को बढ़ाने वाले कार्यक्रम में सफलता मिलती है।
3. कक्षा चार के छात्रों में पर्यावरणीय जागरूकता में बुद्धि लब्धि एवं लिंग का सार्थक अंतर नहीं पाया गया।

पुस्तक से शिक्षा ग्रहण करने के अलावा छात्र कार्यक्रम द्वारा शिक्षा ग्रहण करने में ज्यादा उत्साहित एवं प्रेरित दिखाई दिये।

7. **पटेल (1999)** – ने 'गुजरात' राज्य के 'डांग' जिले के प्राथमिक विद्यालयों के अध्यापकों की पर्यावरण जागरूकता का अध्ययन किया। इसके निष्कर्ष निम्नलिखित है।

1. शिक्षिकाओं की अपेक्षा शिक्षकों के पर्यावरण जागरूकता स्तर अधिक है।
2. पांच साल का अनुभव प्राप्त अध्यापकों कि अपेक्षा पांच साल से ज्यादा अनुभव प्राप्त अध्यापकों की पर्यावरण जागरूकता अधिक है।
3. स्नातक उपाधि प्राप्त अध्यापकों का पर्यावरण जागरूकता स्तर प्राथमिक शिक्षक प्रशिक्षण प्राप्त अध्यापकों से अधिक है।

8. **प्रधान (2002)** – ने माध्यमिक विद्यालयों के अध्यापकों की पर्यावरण जागरूकता का अध्ययन किया। इस अध्ययन के निष्कर्ष निम्नलिखित है।

1. सामाजिक विज्ञान, भाषा तथा विज्ञान विषय शिक्षकों कि पर्यावरण जागरूकता में सार्थक अंतर है।
2. विज्ञान शिक्षकों की पर्यावरण जागरूकता सामाजिक विज्ञान तथा भाषा शिक्षकों से अधिक है।
3. सामाजिक विज्ञान तथा भाषा शिक्षकों की पर्यावरण जागरूकता में सार्थक अंतर नहीं है।

4. शहरी क्षेत्र में कार्यरत् शिक्षक पर्यावरण तथा पर्यावरण समस्या से ज्यादा जागरूक है।

5. शिक्षक तथा शिक्षिकाओं के पर्यावरण जागरूकता में सार्थक अंतर नहीं है।

6. माध्यमिक विद्यालय के शिक्षक तथा शिक्षिकाओं की पर्यावरण जागरूकता समान है।

9. **भट्टाचार्य जी.सी. (1996)** ''वाराणसी में प्राथमिक स्तर की छात्राओं एवं उनके माता–पिता के पर्यावरणीय जागरूकता का अध्ययन'' उनके संशोधन कार्य के निम्नानुसार उद्देश्य थे।

(i) वाराणसी के प्राथमिक स्कूल में तीसरी एवं पांचवी में पढ़ने वाले छात्र एवं छात्राओं के पर्यावरण जागरूकता का अंतर उनके दृष्टिकोण एवं पर्यावरण संबंधी जिम्मेदारी के क्षेत्र में पता लगाना है।

(ii) वाराणसी के कक्षा तीसरी एवं पांचवी की छात्राओं एवं माता–पिता के पर्यावरणीय जागरूकता का स्तर पता लगाना।

(iii) अध्ययन के लिए वाराणसी से तीसरी कक्षा के 290 विद्यार्थियों एवं पांचवीं कक्षा के 180 विद्यार्थियों व उनके 290 माता–पिता प्रदत्तों के रूप में चयनित किए गये। सह संबंध गुणांक एवं t मान द्वारा संग्रहित समंको को विश्लेषण किया गया। अध्ययन के निम्नलिखित निष्कर्ष निकाले गयेः–

1. पर्यावरणीय जागरूकता के संदर्भ में कक्षा तीसरी एवं पॉचवी की छात्राओं में काई भी भेद नही पाया गया।

2. दृष्टिकोण एवं पर्यावरणीय जिम्मेदारी के संदर्भ कक्षा तीसरी एवं पॉचवी की कक्षाओ में कोई सम्बन्धित अन्तर नही पाया गया।

3. कक्षा तीसरी एवं कक्षा पॉचवी के विद्यार्थियो एवं उनके माता पिता के पर्यावरणीय जागरूकता के संदर्भ में सह सम्बन्ध गुणांक पाया गया है।

10. **मिट्टयूस्किन (1980)** – पर्यावरण शिक्षा हेतु मिट्टयूस्किन ने दो स्तरों का निर्धारण किया।

1. शिक्षण संस्थानों के द्वारा पर्यावरण शिक्षा
2. शिक्षण संस्थानों के बाहर पर्यावरण शिक्षा

प्रथम स्तर पर पर्यावरण का कार्यक्रम किण्डरगार्डन, प्राथमिक, माध्यमिक द्वारा प्रदान किया जाए तथा द्वितीय स्तर पर परिवार अवकाश शिविरों, पर्यटन, सांस्कृतिक आयोजनों, सार्वजनिक क्रियाओं राजनीतिक संगठनों समाचार पत्रों आकाशवाणी, दूरदर्शन, चलचित्र आदि द्वारा प्रदान किया जा सकता है।

11. **राजपूत व उनके साथियों (1980)** – में भोपाल शहर के शासकीय प्राथमिक विद्यालय के कक्षा तीन एवं चार के लिए 'पर्यावरण प्रोजेक्ट' आयोजित कराया जिसमें उन्होनें पाया कि विज्ञान के द्वारा बच्चों मे पर्यावरण जागरूकता की जा सकती है। इन्होंने सन् 1985 में एक दूसरा अध्ययन किया जो प्रथम का पूरक था। इसमें उन्होनें पाया कि विज्ञान एवं सामाजिक विज्ञान पर्यावरण जागरूकता करने में सहायक है। इसमें उन्होनें 14 नियंत्रित एवं प्रायोगिक समूह में अध्ययन किया। पर्यावरण जागरूकता के पूर्व एवं पश्चात परीक्षण के बाद उन्होनें पाया कि प्रायोगिक एवं

नियंत्रित समूह के 9 युगल में कोई सार्थक अंतर नहीं है जबकि अन्य पांच में अन्तर था जिनको पर्यावरण शिक्षा के द्वारा पढ़ाया गया था।

12. **विक्टेरिया मूवोंग (1987)** – " माध्यमिक स्कूल के ग्रामीण छात्रों में पर्यावरणीय ज्ञान की जागरूकता एवं दृष्टिकोण का अध्ययन करना।"

अध्ययन के उद्देश्य :–

1. कक्षा IX, X एवं XI के ग्रामीण माध्यमिक स्कूल के छात्रों में पर्यावरणीय ज्ञान, पर्यावरणीय जागरूकता एवं पर्यावरणीय दृष्टिकोण का पता लगाना।
2. कक्षा IX, X एवं XI के ग्रामीण माध्यमिक छात्र एवं छात्राओं के पर्यावरणीय ज्ञान पर्यावरणीय जागरूकता एवं पर्यावरणीय दृष्टिकोण के अंतर का पता लगाना।
3. ग्रामीण माध्यमिक स्कूल के छात्रों में पर्यावरणीय ज्ञान, पर्यावरणीय जागरूकता एवं पर्यावरणीय दृष्टिकोण के संबंध का पता लगाना।

मध्यप्रदेश के ग्रामीण क्षेत्रों से 146 ग्रामीण छात्र एवं 34 ग्रामीण छात्राओं के प्रदत्तों को लिया गय। स्वयं निर्मित पर्यावरणीय जागरूकता, दृष्टिकोण मायनी एवं खूली प्रश्नावली का उपयोग किया। समंको को संग्रहित करने के लिए किया गया। संग्रहित समंको पर मध्यमान, सहसंबंध, मानक विचलन t मान का उपयोग किया गया।

अध्ययन के निष्कर्ष –

1. हर स्तर एवं समूह के अध्ययन के दौरान माध्यमिक ग्रामीण छात्र का पर्यावरणीय ज्ञान माध्यमिक ग्रमीण छात्राओं के पर्यावरणीय ज्ञान के स्तर से अधिक पाया गया।
2. पर्यावरणीय जागरूकता का स्तर माध्यमिक ग्रामीण विद्यार्थियों में अधिक पाया गया।
3. पर्यावरणीय जागरूकता का स्तर माध्यमिक ग्रामीण छात्रों में माध्यमिक ग्रामीण छात्राओं की अपेक्षा अधिक पाया गया।
4. ग्रामीण छात्रों के पर्यावरणीय ज्ञान, पर्यावरणीय दृष्टिकोण एवं पर्यावरणीय जागरूकता में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया।

13. **शर्मा (1981)** ने स्कूली एवं महाविद्यालय के छात्रों एवं सामान्य जनता में उनके अनुसार ही पर्यावरण जागरूकता का अध्ययन किया इसके आधार पर निष्कर्ष निकाला कि यदि माता–पिता द्वारा 12 वर्षो में कम के बच्चों का पर्यावरण शिक्षा दी जाती है तो वह अधिक स्थायी होती है साथ ही माता–पिता द्वारा दी गई दयापान हो जाते हैं। और उस समय युवा अवस्था में दी गई पर्यावरण शिक्षा अधिक प्रभावी होगी यदि पर्यावरण शिक्षा का व्यवहारिक रूप में स्नातक स्तर पर अध्ययन कराया जाये साथ ही युथ क्लब की सहायता पर्यावरण के विकास संबंधित क्षेत्र की शिक्षा दी जाए।

14. **शाहनवाज (1990)** :– न माध्यमिक विद्यालयों के अध्यापकों और विद्यार्थियों में पर्यावरण जागरूकता एवं अभिवृत्ती का अध्ययन किया।

इस अध्ययन से यह निष्कर्ष निकाला कि पर्यावरण जागरूकता एवं अभिवृत्ती ग्रामीण क्षेत्र के अध्यापक वे विद्यार्थियों की अपेक्षा शहरी क्षेत्र के अध्यापक वे विद्यार्थियों में अधिक है।

2.3 उपसंहार :–

पूर्व शोधों के विस्तृत अध्ययन के उपरांत यह ज्ञात होता है कि पर्यावरण जागरूकता के बारे में अधिक कार्य किए गये। उससे अनेक प्रकार के निष्कर्ष निकाले गये। छात्रा एवं छात्राओं में पर्यावरण जागरूकता में कोई अंतर नहीं है। पर्यावरण जागरूकता अशासकीय विद्यालयों में अधिक है। पर्यावरण शिक्षा प्रदान करने से छात्रों पर अच्छा प्रभाव पड़ा। इस प्रकार निष्कर्ष आये है। लेकिन पर्यावरण जागरूकता एवं शैक्षिक उपलब्धि के बारे में गुजरात में इस तरह का कोई शोध न होने के कारण इस तरह से शोध की आवश्यकता महसूस होती है।